सारणी–9.1

क्र0सं0	कार्यवृत्त का नाम	आबंटित क्षेत्रफल(है0)
1	2	3
1	संरक्षण एवं साल सुधार कार्यवृत्त	14768.69
2	विविध वन कार्यवृत्त (आरक्षित वन)	14038.91
	(संरक्षित वन)	211.77
	योग	14250.68
	कुल योग	**29019.37**

राजिवार क्षेत्रीय कार्यवृत्तों का विवरण सारणी–9.2 में दिया गया है।

सारणी–9.2

क्र0 सं0	कार्यवृत्त का नाम	हरिद्वार	श्यामपुर	चिड़िया पुर	खानपुर	लक्सर	रुड़की	योग
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1	संरक्षण एवं साल सुधार कार्यवृत्त							
	1. साल संरक्षण सुधार कार्यश्रेणी	–	3667.70	–	749.40	–	–	4417.10
	2. संरक्षण सुधार कार्यश्रेणी	1355.80	5320.81	1445.1395	696.79	1533.05	–	10351.59
	योग	**1355.80**	**8988.51**	**1445.1395**	**1446.19**	**1533.05**	–	**14768.69**
2.	विविध वन कार्यवृत्त							
	1. यूकेलिप्टस कार्यश्रेणी	–	975.757	2698.9185	–	–	–	3674.6755
	2. विविध कार्यश्रेणी	1632.92	1645.0807	2292.762	4085.48	707.9872	–	10364.2299
	योग	**1632.92**	**2620.8377**	**4991.6805**	**4085.48**	**707.9872**	–	**14038.91**
	3. पटरी कार्यश्रेणी							
	क. नहर	60.25	–	–	–	–	132.52	192.77
	ख. उद्यान	2.30	–	–	–	–	2.50	4.80
	ग. मोटर मार्ग	–	–	–	–	–	14.20	14.20
	योग	**62.55**	–	–	–	–	**149.22**	**211.77**
	विविध वन कार्यवृत्त	1695.47	2620.8377	4991.6805	4085.48	707.9872	149.22	14250.68
	कार्यवृत्तों का कुल योग	**3051.27**	**11609.3477**	**6436.82**	**5531.67**	**2241.0372**	**149.22**	**29019.37**

को पथरी वन ब्लॉक में पुर्नस्थापित किया जाय। वन क्षेत्रों से नाजायज गूजरों तथा उनके मवेशियों को सख्ती से हटाया जाय, जिससे वन पुनस्थापित हो सके।

10.26 **भूमि संरक्षण** – आवश्यकतानुसार उपचार कार्य किये जाने का विस्तृत विवरण अध्याय–17 में दिया गया है।

2. संरक्षण सुधार कार्यश्रेणी – 10351.59 है०

10.27 **सामान्य गठन** .– इस कार्यश्रेणी में, श्री मिश्रा की प्रबन्ध योजना के वे समस्त क्षेत्र संरक्षण एवं सुधार कार्यवृत्त तथा गंगा के मझाड़े वाले वन खण्ड़ों को सम्मिलित किया गया है। अधिकांशतया ये प्राकृतिक वन क्षेत्र हैं। वर्तमान में इन वनों की दशा अत्यन्त निम्न कोटि की है। इन क्षेत्रों में अतीत में विनाश की सीमा तक कटान तथा चरान–चुगान कराया गया है। ये क्षेत्र अग्नि दुर्घटनाओं से प्रभावित होने के कारण अत्यधिक अवनत स्थिति में पहुंच गये हैं। इस कार्यश्रेणी में सम्मिलित किये गये अधिकांश क्षेत्रों की विशेष स्थिति को देखते हुए इनके चरान–चुगान व अग्नि से रक्षित करते हुए भूमि व जल संरक्षण के दृष्टिकोण से सुधार कार्यो की अत्यन्त आवश्यकता है।

10.28 **वनस्पति का सामान्य रूप** – सामान्यतः वनस्पति का स्वरूप अच्छा नहीं है। यह गंगा मझोड़ क्षेत्र से 650 मीटर तक ऊँचाई वाले शिवालिक पर्वतमाला के शुष्क पर्णपाती वन है। क्षेत्र में कहीं–कहीं पर विकृत एवं छोटे वृक्ष हैं। पूर्व के अनावश्यक पातन, अनियंत्रित चारण व शाखाकर्तन तथा अग्नि दुर्घटनाओं के कारण वनों की दशा अत्यन्त खराब हो गयी है। इन वनों की वानस्पतिक आवरण की स्थिति अच्छी नहीं है। शिवालिक पर्वत श्रंखलाओं के सीधे एवं खड़े भागों पर भाबड़ घास एवं अन्य घास का आवरण है। कुछ स्थान आवरण विहीन भी है। नदियों व रावों के किनारे भू–क्षरण व भू–स्खलन से अत्यधिक प्रभावित होने के कारण प्रतिवर्ष बड़े–बड़े शैल खण्डों के विघटन से भू–स्खलन की स्थिति में निरन्तर वृद्धि हुई है। इस कार्यश्रेणी में मुख्यतः उत्तरी शुष्क पर्णपाती वर्ग की वनस्पति पायी जाती है। चैम्पियन व सेठ के वर्गीकरण के अनुसार यह वन 5बी/सी–2 की श्रेणी में आते हैं। इसका विस्तृत विवरण अध्याय–2 में दिया गया है।

10.29 **प्रबन्ध के विशेष उद्देश्य** – अध्याय–9 में उल्लिखित प्रबंध के सामान्य उद्देश्यों के साथ–साथ, इस कार्यश्रेणी के मुख्य उद्देश्य निम्न प्रकार है –

1. वनों में विद्यमान वनस्पति का संरक्षण कर सस्य की वर्तमान अवस्था में सुधार लाना ताकि मृदा व जल संरक्षण किया जा सके।
2. उपयुक्त प्रजातियों का रोपण करके कम घनत्व वाले रिक्त क्षेत्रों की वननिधि में वृद्धि करना एवं प्राकृतिक पुनर्जनन के लिये अनुकूल स्थिति उत्पन्न करना।
3. वनों में अधिक उपयोगी, स्थानीय मूल्यवान प्रजातियों के अनुपात में वृद्धि करना।
4. भू–क्षरण तथा भू–स्खलन से प्रभावित क्षेत्रों का उपचार करना।
5. वन्य जीवों के वास स्थलों का सुधार करना।
6. जल स्रोतों को संरक्षित एवं सवंर्द्धित करना।